आलोचक रामविलास शर्मा : प्रेमचंद के विशेष संदर्भ में

प्रश्नपत्र - हिंदी आलोचना

कोड - HIND 3012

सेमेस्टर - VI

पाठ्यक्रम - स्नातक (प्रतिष्ठा) हिंदी

प्रो. प्रमोद मीणा,

हिंदी विभाग

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी - 845401

आलोचक रामविलास शर्मा

(10 अक्टूबर, 1912- 30 मई, 2000

प्रमुख कृतियां :

प्रेमचन्द और उनका युग

भारतेन्दु युग

निराला

प्रेमचन्द और उनका युग

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याएँ

प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना

रामविलास शर्मा द्वारा हिंदी की प्रगतिवादी आलोचना की सीमाओं को पहचानकर दूर करने का महान कार्य किया जाना

प्राचीन समाज और साहित्य का मूल्यांकन मार्क्सवाद की ऐतिहासिक दृष्टि के साथ किया जाना

प्राचीन साहित्य की विषयवस्तु और उसके कलात्मक सौंदर्य, दोनों के महत्व को रेखांकित करना

शोषक वर्ग द्वारा निर्मित नैतिक और कलात्मक मूल्यों को एक सिरे से खारिज करने का सरलीकरण इनके यहाँ नहीं

साहित्य के कुछ स्थायी मूल्यों की बात करना
(साहित्य : स्थायी मूल्य और मूल्यांकन)

भारतेंदु युग, निराला और प्रेमचंद का मूल्यांकन करते हुए हिंदी साहित्य की प्रगतिशील धारा का विकास स्पष्ट कर देना

प्रगतिवादी आलोचना को भी इसी के साथ हिंदी की जातीय परंपरा के साथ जोड़ देना

प्रगतिवादी आलोचना को हिंदी जनता का विश्वास अर्जित कराना

‘भारतेंदु युग’ में दिखाया कि हिंदी में नवीन चेतना किस प्रकार कुछ व्यक्तियों और संस्थाओं के माध्यम से विकसित हो रही थी

उस चेतना को हवा देने वाली परिस्थितियों को रेखांकित करने के साथ-साथ यह भी बताना कि इस नवीन चेताना और उसके वाहक साहित्य से परिस्थितियाँ भी खुद कैसे तब्दील हो रही थी

रामचंद्र शुक्ल ने भी भारतेंदु और उनके समकालीन साहित्यकारों का महत्व समझाया था

लेखकों की व्यक्तिगत उपलब्धियों को इतिहास निर्माण के परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट करना

डॉ. शर्मा की शैली सारग्राहिणी, तथ्यात्मक और सीधी है, वे पाठक और वर्ण्य विषय के बीच में नहीं आते

भारतेंदु युग को राष्ट्र की नवचेतना का युग बताते हैं और दिखाते हैं कि कैसे साम्राज्यवाद का नंगा चित्र उस समय का साहित्य पेश करता है

- अकाल पर हिंदी प्रदीप में होली और आल्हा का छपना
- सार सुधानिधि और कवि वचन सुधा में देशी-विदेशी समाचारों पर निर्भीक टिप्पणियाँ
- भारतेंदु और प्रेमघन की कविताओं में अंग्रेजों पर सीधा-सीधा व्यंग्य तथा गदाधर सिंह कृत चीन में तेरह मास

भारतेंदु युग के उदय में पत्र-पत्रिकाओं, सभा-समितियों, स्वयंसेवी संगठनों और व्याख्यानों का विस्तार से योगदान समझाना

उनका परिश्रम और ईमानदारी सहज रूप में सामने आती है

समाज और व्यक्ति के विश्लेषाणत्मक सूत्रों की संगति में रचना में बैठाना और फिर रचना का समाज पर पड़ा प्रभाव स्पष्ट करना

प्रेमचंद हिंदी और उर्दू, दोनों के बड़े लेखक थे और यह माना जाता है कि उन पर तिलिस्म होशरुबा, उमराव जान अदा और फिसानए आजाद का काफी असर है किंतु 'प्रेमचंद और उनका युग' में रामविलास शर्मा स्पष्ट करते हैं कि इन रचनाओं से प्रेमचंद की कल्पना शक्ति प्रखर हुई और उन्हें लिखने की प्रेरणा मिली जबकि उनकी रचनाएँ मूलत: भारतेंदु, बालकृष्ण भट्ट और राधाकृष्णदास के कथा साहित्य का अगला और स्वाभाविक विकास

भारतेंदु, प्रेमचंद और निराला पर लिखते समय रामविलास शर्मा लेखक के व्यक्तित्व और कृतित्व के संगत सूत्रों को जोड़ते हैं

आजकल कुछ उत्साही आलोचक रचना के साथ न्याय करने के नाम पर रचना को रचनाकार से विच्छिन्न करके देखने का आग्रह करते हैं

किंतु रचना जिस संसार की उपज है, वह संसार ही रचना का संदर्भ होता है

प्रेमचंद के उपन्यासों की लोकप्रियता का शुभ प्रभाव यह बताना कि चंद्रकांता और तिलस्मी होशरुबा पढ़ने वाले लाखों पाठकों को सेवा सदन जैसे सामाजिक यथार्थ का पाठक बना देना

* चंद्रकांता के पाठकों को अपनी ओर खींचना, चंद्रकांता में अरुचि पैदा करना और जनरुचि के लिए उन्होंने नये मापदंड बनाए, साहित्य के नये पाठक तैयार करना

* प्रेमचंद ने हिंदी पाठकों के दायरे को व्यापक बनाया

रामविलास शर्मा हिंदी के उन आलोचकों से सहमत नहीं जो कहते थे कि प्रेमचंद में मनोवैज्ञानिक चित्रण कर सकने की क्षमता नहीं थी

मनोवैज्ञानिक चित्रण का मतलब यह नहीं होता कि उपन्यासकार फ्रायड और युंग की पुस्तकें रखकर पात्रों का सृजन करे

प्रेमचंद के उपन्यासों की लोकप्रियता स्वयं में इसका खंडन करती है

रामविलास शर्मा का मत था कि कौनसा पात्र किस स्थिति में क्या करता है, के आधार पर ही मनौवैज्ञानिक चित्रण की सूक्ष्मता देखी जानी चाहिए

प्रेमचंद की एक अन्य विशेषता रेखांकित करना – भारतीय जीवन का स्थिर नहीं गतिशील चित्रण : परिवर्तितसमाज में मिटती और उभरती शक्तियों का अंकन

गतिमय यथार्थ को पकड़ पाना युगदृष्टा प्रेमचंद सरीखों के ही बस की बात होती है – होरी और गोबर, दोनों का चित्रण

मार्क्सवाद के नाम पर सिद्धांतों को यांत्रिक ढंग से कृतियों पर न थोपना : प्रेमचंद पर लिखते समय प्रेमचंद जैसी सहज भाषा ही अपना लेते हैं

रामविलास शर्मा द्वारा प्रेमचंद के पात्रों के जटिल और दोहरे व्यक्तित्व को पकड़ना

प्रेमचंद के पात्रों का विकास अत्यंत मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मता रखता है, वे सरलीकृत श्वेत-श्याम चरित्र नहीं हैं

कर्मभूमि के नायक अमरकांत के ऊपरी आदर्शवाद के नीचे विद्यमान समझौतापरस्ती को उघाड़कर रख देना

अमरकांत जैसे गाँधीवादियों की मार्क्सवादी आलोचना उनकी कथनी और करनी के भेद को खोलकर रख देती है

गोदान की व्याख्या मार्क्सवादी पद्धति से करते हुए उसके पात्रों की जाँच उनकी वर्गीय स्थिति से करना

भारतीय समाज और इतिहास के संदर्भ में उनके अंतर्विरोध दिखाना

होरी प्रेमचंद के जमाने का मिटता किसान है तो गोबर नये जमाने का उभरता सर्वहारा

नायक होरी कर्मफल और सामंती व्यवस्था में दबा हुआ और विपत्तियों को झेलने की अपार क्षमता होने पर भी इसीलिए संघर्ष नहीं कर पाना

बाप-बेटे, पुरानी और नयी पीढ़ी, पुराने और नये भारत का द्वंद्व

हिंदू और मुसलिम दोनों के जीवन पर समान रूप से लिखने वाले प्रेमचंद के साहित्य को हिंदी जाति में सांप्रदायिकता का ज़हर घोलने वालों के लिए एक चुनौती स्वरूप दिखाना

प्रेमचंद को कबीर, तुलसी और भारतेंदु की परंपरा से जोड़कर प्रेमचंद को ही स्थापित नहीं किया अपितु प्रगतिवादी आलोचना को भी हिंदी की जातीय परंपरा के साथ जोड़ना

धन्यवाद

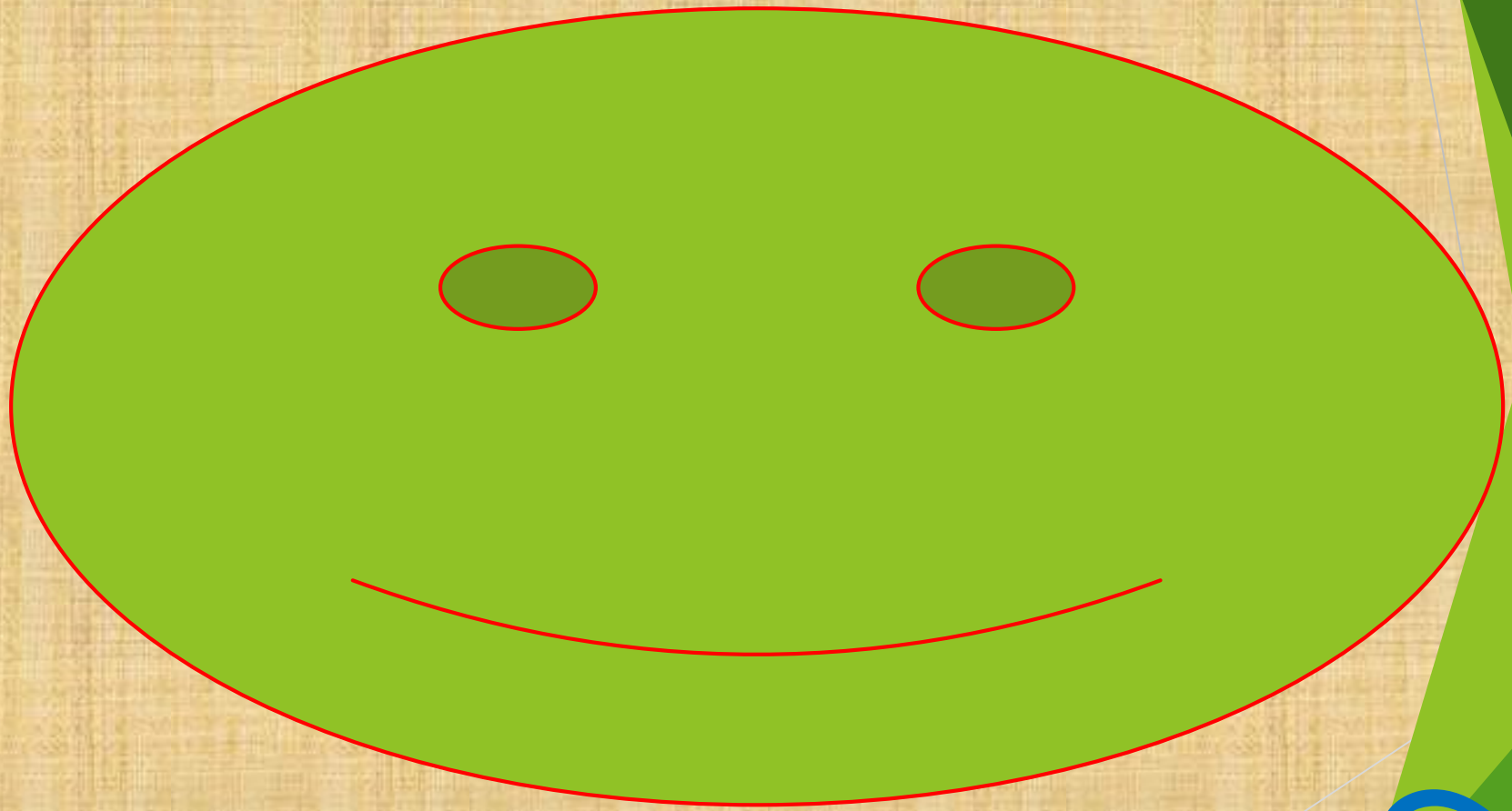

शुक्रिया